ISSN-2230-7540

क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी आंदोलन और महान क्रान्तिकारी भगत सिंह

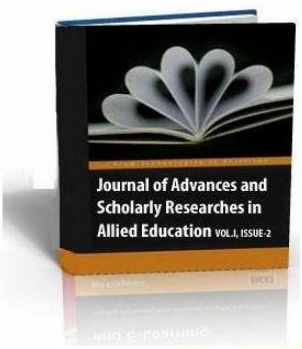

Sneha Pandey*

Student

सार

'नौजवान राजनीतिक कार्यकर्ताओं के नाम पत्र 'शीर्षक के साथ मिले इस दस्तावेज के कई प्रारूप और हिन्दी अनुवाद उपलब्ध हैं, यह इसके सम्पूर्ण रूप का अंग्रेजी अनुवाद है। 'कौम के नाम सन्देश' के रूप में इसका एक संक्षिप्त रूप भी इस अनुभाग में संकलित है। लाहौर के पीपुल्ज में 29 जुलाई, 1931 और इलाहाबाद के अभ्युदय में 8 मई, 1931 के अंक में इसके कुछ अंश प्रकाशित हुए थे। यह दस्तावेज अंग्रेज सरकार की एक गुप्त पुस्तक 'बंगाल में संयुक्त मोर्चा आन्दोलन की प्रगति पर नोट' से प्राप्त हुआ, जिसका लेखक एक सी आई डी अधिकारी सी ई एस फेयरवेदर था और जो उसने 1936 में लिखी थी । उसके अनुसार यह लेख भगतसिंह द्वारा लिखा गया था और 3 अक्तूबर, 1931को श्रीमती विमला प्रभादेवी के घर से तलाशी में बरामद हुआ था। यह पत्रध् लेख भगत सिंह ने फाँसी से करीब डेढ़-दो महीने पहले, सम्भवतरू 2 फरवरी, 1931, को जेल से ही लिखा था।

प्रस्तावना

भगत सिंह एक महान देशभक्त और क्रान्तिकारी थे। लेकिन वे बुद्धिमत्ता की खान भी थे। बचपन से ही वे पुस्तकों में खोए रहते थे। लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित किया गया पुस्तकालय 'द्वारकादास लायब्रेरी' जैसे उनका घर बन गया था। उनके साथी बताते हैं कि किस तरह हर समय उनके कुरते की जेबों में किताबें भरी रहती थीं। बगैर पुस्तकों के रहना उन्हें किसी गुनाह की तरह लगता था। पढ़ने के लिए उनका यह जुनून उनके जेल-प्रवास में भी बरकरार रहा, जहां उन्होंने अपनी जिन्दगी के आखिरी लगभग दो साल बिताए थे। वे 24 वसन्त देखने से पहले ही शहीद हो गए थे। ये दो आलेख उनकी जेल में लिखी उस डायरी से लिए गए हैं, जिसमें वे कारावास के दौरान पढ़ी गई पुस्तकों में से टिप्पणियां दर्ज किया करते थे।

मुकदमें के दौरान उनके द्वारा अदालत में दिया गया बयान, अखबारों तथा उनके द्वारा मित्रों व रिश्तेदारों को लिखे गए खत इस बात के साक्षी हैं कि सरदार भगत सिंह की सोच कितनी विस्तृत थी, उन्हें समाज और सामाजिक व राजनीतिक आन्दोलनों के बारे में कार्यों से धीरे-धीरे दूर होते गए व मार्क्सवाद के करीब आ गए। भगत सिंह ने जेल में चार पुस्तकें व एक पर्चा लिखा था। दुर्भाग्यवश उनका यह लेखन जेल से चोरी-छिपे बाहर

ISSN-2230-7540

लाने के क्रम में नष्ट हो गया। इस सामग्री को अपने पास रखने के जुर्म में भारी जुर्माने के डर से यह सामग्री एक हाथ से दूसरे हाथ में जाती रही और इस दौरान कहीं गुम हो गई।

शहारत के कुछ दिनों या हफ्ते पहले लिखा गया पर्चा 'मैं नास्तिक क्यों हूं' सौभाग्य से उनके पिता के हाथों चोरी-छिपे जेल से बाहर आ गया। उन्होंने इस पर्चे का प्रकाशन जून 1931 में साप्ताहिक अखबार 'द पीपुल' में करवाया था। इस अखबार की स्थापना लाला लाजपत राय ने की थी तथा इसके सम्पादक थे लाला फकीर चन्द। पर्चे के प्रकाशन के तत्काल बाद अखबार पर पाबन्दी लगा दी गई थी, फिर भी इस पर्चे का प्रकाशन व वितरण गैरकानूनी रूप से अनवरत जारी रहा। कई बार इसके कुछ अंशों को भी छापा जाता रहा।

एक बुजुर्ग क्रान्तिकारी लाला रामसरन दास ने अपनी कविता की पुस्तक 'द ड्रीमलैंड' की भूमिका लिखने के लिए भगत सिंह से अनुरोध किया था। दोनों आलेख-'मैं नास्तिक क्यों हूं' और 'ड्रीमलैंड की भूमिका' भगत सिंह की तीक्ष्ण बुद्धि, गहन अध्ययन, जटिल विषयों पर उनकी समझ व उन्हें आम लोगों की समझ के अनुरूप भाषा में व्यक्त करने की क्षमता को दर्शाते हैं। साथ ही ये आलेख भगत सिंह की संवेदनशीलता, अपने वरिष्ठ साथियों के प्रति सम्मान तथा जिन बातों से असहमति हो, उन्हें प्रकट करने के स्पष्ट दृष्टिकोण की भी बानगी हैं। उदाहरण के लिए धर्म में विश्वास रखने वालों के प्रति उनके विचार, जिससे वे सिद्धान्ततः असहमत थे।

भगत सिंह की 100 वीं जयंती और उनकी शहादत के 75 वें वर्ष की याद में उनके दो आलेखों को भारत की जनता के सामने प्रस्तुत करते हुए नेशनल बुक ट्रस्ट स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता है।

भगत सिंह के करीबी साथी जितेन्द्र नाथ सान्याल द्वारा लिखी गई उनकी जीवनी के नए संस्करण का हिन्दी में प्रकाशन नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा पहले ही किया जा चुका है। इसके अलावा उनकी शहादत पर केन्द्रित लोकप्रिय हिन्दी गीतों व कविताओं का संकलन 'फांसी लाहौर की' और इसी संकलन का पंजाबी संस्करण 'शहीद-ए-आजम भगत सिंह काव' का प्रकाशन भी ट्रस्ट द्वारा किया गया है। भगत सिंह के भाषणों, लेखों और पत्रों के संकलनों को सभी भारतीय भाषाओं में जल्दी ही प्रकाशित करने की भी योजना है।

साहित्य की समीक्षा

भगत सिंह न केवल भारत के महानतम देशभक्त तथा क्रांतिकारी समाजवादियों में से एक थे, बल्कि भारत के प्रारंभिक मार्क्सवादी विचारकों में भी उनका प्रमुख स्थान था। दुर्भाग्यवश अभी तक लोग उनके व्यक्तित्व के इस अंतिम पहलू से कम ही परिचित हैं। यही वजह है कि विभिन्न प्रकार के प्रतिक्रियावादी, रूढ़िवादी तथा साम्प्रदायिक तत्त्व अपनी स्वयं की राजनीति तथा विचारधाराओं के लिए भगत सिंह तथा उनके चंद्रशेखर आजाद जैसे साथियों के नाम का गलत ढंग और फरेब से, अपनी उद्देश्यपूर्ति के लिए उपयोग करते रहे हैं।

भगत सिंह का देहांत 23 वर्ष की अल्पायु में ही हो गया था। जब उन्होंने गांधीवादी राष्ट्रवाद छोड़कर क्रांतिकारी आंतकवाद का रास्ता अपनाया तो शीघ्र ही उनका राजनीतिक चिंतन तथा उसका व्यावहारिक रूप सामने आने लगा। परंतु 1927-28 से ही वे क्रांतिकारी शूरवीरता से अधिक मार्क्सवाद की ओर आकृष्ट होने लगे। 1925 से 1929 के दौरान भगत सिंह ने विशेष रूप से रूसी क्रांति तथा सोवियत संघ पर पुस्तकों का गहन अध्ययन किया, यद्यपि उन दिनों ऐसी पुस्तकों को अपने पास रखना अपने आप में एक क्रांतिकारी तथा कठिन कार्य था। 1920 के दशक में भगत सिंह भारत में क्रांतिकारी आंदोलनों, सशस्त्र संघर्ष तथा मार्क्सवाद की गहन समझ रखने वाले व्यक्तियों में से थे। उन्होंने अपने क्रांतिकारी मित्रों तथा युवा साथियों को भी इस प्रकार का साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित किया। अपने मकदमे की सुनवाई के दौरान उन्होंने लाहौर उच्च न्यायालय में खुलकर कहा, "क्रांति की तलवार विचारों की सान पर ही पैनी होती है।" 1928 के आखिरी दिनों में भगत सिंह तथा उनके साथी समाजवाद को अपनी गतिविधियों के अन्तिम उद्देश्य के रूप में स्वीकार कर चुके थे और उन्होंने अपने संगठन का नाम भी 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' से बदल कर 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' रख लिया था।

इसके बाद सन् 1929 में अपनी गिफ्तारी से पहले और उसके बाद भी, भगत सिंह मार्क्सवाद की ओर अग्रसर रहे और उसके हर पहलू की पूरी-पूरी जानकारी जुटाने की लगातार कोशिश करते रहे। इस दौरान उन्होंने राष्ट्रवादी आंदोलन, हिंसा तथा अहिंसा, क्रांतिकारी आतंकवाद, धर्म, सांप्रदायिकता, पूर्ववर्ती क्रांतिकारियों तथा समकालीन विचारधाराओं तथा स्वयं अपने विचारों की समीक्षा की।

ISSN-2230-7540

यह भारतीयों के लिए बड़ी त्रासदी ही कही जाएगी कि एक विलक्षण प्रतिभा का उपनिवेशवादी शासकों के हाथों इतनी जल्दी अंत हो गया।

इस छोटी पुस्तिका में भगत सिंह द्वारा लिखे गए दो लेखों से पाठकों को परिचित कराया गया है, जिनसे वे अभी तक अनभिज्ञ थे। ये दोनों लेख भगत सिंह ने 1930-31 में फांसी की प्रतीक्षा करते हुए जेल में लिखे थे। जैसा कि उनके अनगिनत पत्रों, वक्तव्यों तथा लेखों से प्रकट होता है, इन दोनों लेखों में भी वे एक ऐसे क्रांतिकारी के रूप में सामने आते हैं जो पूर्ण रूप से मार्क्सवाद के प्रति बचनबद्ध है और जो इस प्रणाली को इसकी संपूर्ण जटिलताओं के साथ व्यावहारिक रूप प्रदान करने की योग्यता भी रखता है।

अपने पहले लेख में भगत सिंह ने धर्म तथा नास्तिकता पर विचार किया है। यहां वे अपने निरीश्वरवाद की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं, यद्यपि अपने बाल्यकाल के आरंभिक दिनों में वे धर्म से तथा बाद में शचींद्र नाथ सान्याल जैसे पूर्ववर्ती क्रांतिकारी आतंकवादियों से प्रभावित हुए थे। 1920 के दशक में सान्याल की पुस्तक 'बंदी जीवन' सभी क्रांतिकारियों के लिए आधारभूत पाठ्य पुस्तक मानी जाती थी। शुरुआत में क्रांतिकारी आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने के लिए धर्म तथा रहस्यवाद पर भरोसा करते थे, जिसे वे अपनी साहसिक गतिविधियों द्वारा प्रदर्शित भी करते थे। इस लेख में तथा इसी प्रकार दूसरे लेख में भी भगत सिंह ने प्रारंभिक क्रांतिकारियों के दृष्टिकोण से संबंधित अपनी समझ को पूरी तरह प्रदर्शित किया है तथा उनकी धार्मिकता के स्त्रोत का भी चित्रण किया है। वे कहते हैं कि वैज्ञानिक समझ के बगैर राजनीतिक गतिविधियों में स्वयं को आत्मिक रूप से जीवन रखने तथा व्यक्तिगत मोह के विरुद्ध संघर्ष करने, हताशा पर विजय पाने, शारीरिक सुख-सुविधाओं, परिवार तथा जीवन को बलिदान करने के लिए उन्हें तर्कहीन धार्मिक विश्वासों तथा रहस्यवाद की आवश्यकता थी। जब भी कोई व्यक्ति अपने जीवन को संकट में डालने तथा दूसरे सभी प्रकार के बलिदानों के लिए तैयार होता है तो उसे गहरे प्रेरणा-स्त्रोतों की आवश्यकाता होती है, जिसे धर्म तथा रहस्यवाद पूरा करता है। पुराने क्रांतिकारी अपनी इस जरूरत की पूर्ति के लिए धर्म और रहस्यवाद का सहारा लेते थे।[1] परंतु जो लोग अपनी गतिविधियों की प्रकृति से परिचित थे, जो क्रांतिकारी विचारधारा की ओर अग्रसर हो चुके थे, जो विश्वासपूर्वक निडर होकर फांसी पर चढ़ सकते थे, जिन्हें किसी भी प्रकार की सांत्वना अथवा मुक्ति की तमन्ना नहीं थी और जो दलितों की आजादी तथा उद्धार के लिए लड़ रहे थे (क्योंकि वे इसके अलावा कुछ और नहीं कर सकते थे), उन्हें धर्म तथा रहस्यवाद के सहारे की जरूरत नहीं रह गई थी।

उस समय भगत सिंह स्वयं फांसी के फंदे की प्रतीक्षा कर रहे थे। वे जानते थे कि ऐसे क्षण में भगवान की शरण लेना बहुत सरल है। "भगवान से मनुष्य को गहरी सांत्वना तथा आश्रय मिल सकता है।" दूसरी ओर, अपनी स्वयं की आंतरिक शक्ति पर निर्भर रहना सरल काम नहीं है। उन्होंने कहा, "तूफानों तथा आंधियों में अपने पांव पर खड़े रहना बच्चों का खेल नहीं है।" वे यह भी जानते थे कि इस कार्य के लिए अत्यधिक नैतिक शक्ति की आवश्यकता थी तथा आधुनिक क्रांतिकारी एक अनूठे नैतिक रास्ते पर चल रहे थे। यह रास्ता मनुष्य को 'मानव जाति की सेवा तथा दुखी मानवता की स्वतंत्रता' के प्रति समर्पण के लिए प्रेरित हालांकि भगत सिंह ने उन्हें इन लेखों में प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत किया है, फिर भी वे एक दूसरे महत्त्वपूर्ण पहलू अर्थात् राष्टवादी प्रेरणा के स्त्रोत के रूप में धर्म और सांप्रदायिकता के बीच के अंतर को स्पष्ट करते हैं। आरंभिक क्रांतिकारियों ने धर्म तथा रहस्यवाद का प्रयोग प्रेरणा और विचारधारा के लिए किया, परंतु वे सांप्रदायिक नहीं थे. उनके लिए धर्म उनकी राजनीति का आधार न होकर आंतरिक शक्ति का एक स्त्रोत था। इसने उन्हें सभी भारतवासियों की राष्ट्रीय आजादी के लिए योद्धा बनने के लिए प्रेरित किया, न कि सांप्रदायिक राजनीति का संगठनकर्ता बनने के लिएय जो भारतीयों के दूसरे वर्गों के प्रति घृणा फैलाते हैं। जब उनके धार्मिक तथा रहस्यवादी विश्वासों ने उन्हें साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया, उस समय सांप्रदायिक तत्त्व व्यक्तिगत रूप से साम्राज्यवाद समर्थक थे और एकजुट भारतीयों को विभाजित करके साम्राज्यवाद के विरुद्ध नहीं बल्कि दूसरे भारतीयों की ओर अपनी राजनीति की धार को मोड़कर जानबूझ कर साम्राज्यवाद को लाभ पहुंचाते थे।

करता था। इस रास्ते पर वही नर-नारी चल रहे थे, जो साहस के साथ 'दमनकर्ताओं, शोषकों तथा जालिमों' को ललकार रहे थे, जो 'मानसिक जड़ता' का विरोध कर रहे थे तथा आत्म-चिंतन पर बल दे रहे थे। जैसा कि भगत सिंह ने आगे कहा, "आलोचना तथा स्वतंत्र चिंतन एक क्रांतिकारी की दो अनिवार्य विशेषताएं हैं।"

भगत सिंह कहते हैं कि एक विवेकशील, तर्कसंगत जीवन जीना सरल काम नहीं है। अंधविश्वासी रहकर, सांत्वना अथवा राहत प्राप्त करना सरल है। परंतु यह हमारा कर्तव्य है कि हम निरंतर एक तार्किक जीवन जिएं और इसी कारण भगत सिंह, अपने लेख के अंत में, अपने आप को नास्तिक

ISSN-2230-7540

तथा यथार्थवादी (भौतिकवादी) घोषित करते हुए कहते हैं, ''वे एक ऐसे व्यक्ति की भांति खड़े होना चाहते हैं जिसका सिर आखिर तक ऊंचा रहता है, फांसी के सख्ते पर भी।''

भगत सिंह द्वारा किए गए धर्म के विश्लेषण तथा उसके मूल कारक में हमें उसकी शक्तिशाली, क्रांतिकारी वचनवद्धता और ऐतिहासिक, भौतिकवादी तथा वैज्ञानिक ढंग से उनके सोचने की क्षमता की झलक मिलती है।

उनके धर्म में, धर्म की रचना शासक तथा शोषक वर्गों द्वारा लोगों को केवल धोखा देने के लिए ही नहीं, बल्कि एक वर्ग विशेष के विशेषाधिकारों तथा सत्ता को न्यायसंगत ठहराने तथा लोगों को सामाजिक रूप से चुप रखने के लिए की गई है। वास्तविक जीवन में धर्म इस उद्देश्य की पूर्ति भी करता है और इसीलिए वह इन वर्गों का मित्र तथा हथियार बन जाता है। परंतु धर्म, विशेष रूप से प्राचीन मनुष्य द्वारा अपने प्राकृतिक वातावरण, अपनी सामाजिक गतिविधि तथा सामाजिक संगठनों को पूर्ण रूप से न समझने की अयोग्यता का परिणाम है। मनुष्य अपने जीवन को भी नियंत्रित नहीं रख सका तथा अपनी कमियों को भी दूर नहीं कर सका। तब ईश्वर एक 'लाभदायक'मिथक बन गया। यह मिथक 'प्राचीन युग में समाज के लिए लाभदायक था।'

यही नहीं, 'भगवान का विचार मुसीबत में मनुष्य के लिए बहुत सहायक होता है।' ईश्वर तथा धर्म ने बेसहारा व्यक्ति को जीवन का साहस के साथ मुकाबला करने योग्य बना दिया। 'कठिन परिस्थितियों का साहस के साथ मुकाबला करने, संकटों का दृढ़ता पूर्वक सामना करने, समद्धि तथा संपन्नता में मनुष्य के घमंड पर अंकुश रखने के लिए ईश्वर को एक काल्पनिक अस्तित्व प्रदान किया गया।' 'विश्वास कठिनाई को कम कर देता है, उसे सुखद भी बना सकता है। ईश्वर से मनुष्य को सांत्वना तथा ढाढस भी प्राप्त हो सकते हैं।' इस प्रकार, असहाय, वंचित तथा निराश व्यक्तियों के लिए ईश्वर 'एक पिता, माता, बहन भाई, मित्र तथा सहायक के रूप में कार्य करता है।'

कार्यप्रणाली और विश्लेषण

भगत सिंह (जन्म 28 सितम्बर 1907, मृत्यु 23 मार्च 1931) भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी क्रांतिकारी थे। चन्द्रशेखर आजादव पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर इन्होंने देश की आजादी के लिए अभूतपूर्व साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया। पहले लाहौर में साण्डर्स की हत्या और उसके बाद दिल्ली की केन्द्रीय संसद (सेण्ट्रल असेम्बली) में बम-विस्फोट करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खुले विद्रोह को बुलन्दी प्रदान की। इन्होंने असेम्बली में बम फेंककर भी भागने से मना कर दिया। जिसके फलस्वरूप इन्हें 23 मार्च 1931 को इनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फाँसी पर लटका दिया गया। सारे देश ने उनके बलिदान को बड़ी गम्भीरता से याद किया।

शहीद भगतसिंह को आज भी देश की व्यापक आबादी हाथ में पिस्तौल लिये क्रान्तिकारी के रूप में तो जानती है पर उनके क्रान्तिकारी विचारों से अपरिचित है। इसका मुख्य कारण तो आजादी के बाद सत्ता में आये भूरे अंग्रेजों द्वारा शहीद भगतसिंह के साहित्य को दबाना रहा है। सरकार चाहे किसी की रहे पर भगतसिंह के साहित्य को छपवाकर जनता तक किसी ने नहीं पहुँचाया। पर हालिया कुछ सालों में जनपक्षधर बुद्धिजीवियों, क्रांतिकारी संगठनों व प्रगतिशील प्रकाशकों के दम पर भगतसिंह व उनके साथियों का साहित्य आम जनता तक पहुँचने लगा है व उनके विचारों से जनता लगाव महसूस करने लगी है। राहुल फाउण्डेशन, लखनऊ ने भी भगतसिंह और उनके साथियों के महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों को बड़े पैमाने पर जागरूक नागरिकों और प्रगतिकामी युवाओं तक पहुँचाया है और इसी सोच के तहत उन्होने 2006 में भगतसिंह और उनके साथियों के तब तक उपलब्ध सभी दस्तावेजों को पहली बार एक साथ प्रकाशित किया था। 'मैं नास्तिक क्यों हूँ?' जैसे कई महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों और जेल नोटबुक का जिस तरह आठवें-नवें दशक में पता चला, उसे देखते हुए, अभी भी कुछ सामग्री यहाँ-वहाँ पड़ी होगी, यह मानने के पर्याप्त कारण मौजूद हैं। इसीलिए इस संकलन को राहुल फाउण्डेशन ने 'सम्पूर्ण दस्तावेज' के बजाय 'सम्पूर्ण उपलब्ध' दस्तावेज नाम दिया था।

नौजवान भारत सभा के आग्रह पर राहुल फाउण्डेशन ने इस पुस्तक की सॉफ्ट कॉपी उपलब्ध करवायी है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों तक भगतसिंह के विचारों को पहुँचाया जा सके। नीचे भगतसिंह व उनके साथियों के सारे दस्तोवेज उसी क्रम में प्रस्तुोत हैं जिस क्रम में राहुल फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक में हैं। सभी लेखों के लिंक नीचे दिये गये हैं। जो पाठक किन्हीं कारणों से इतनी बड़ी पुस्तक नेट पर नहीं पढ़ना चाहते हैं, वो राहुल फाउण्डेशन से ये पुस्तक मंगवा भी सकते हैं। पुस्तक का मूल्य काफी कम रखा गया है।

ISSN-2230-7540

इस समय हमारा आन्दोलन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। एक साल के कड़े संघर्ष के बाद गोलमेज सम्मेलन ने हमारे सामने, संवैधानिक सुधारों-सम्बन्धी कुछ निश्चित बातें प्रस्तुत की हैं और कांग्रेसी नेताओं से कहा गया है कि वर्तमान परिस्थितियों में अपना आन्दोलन वापस लेकर इसमें मदद करें। इस बात का हमारे लिए कोई महत्त्व नहीं है कि वे आन्दोलन समाप्त करने का निर्णय करते हैं या नहीं करते। यह तो निश्चित है कि वर्तमान आन्दोलन का अन्त किसी न किसी तरह के समझौते के रूप में होगा। यह बात अगल है कि समझौता जल्द होता है या देर से। वास्तव में समझौता कोई घटिया या घृणित वस्तु नहीं है, जैसाकि प्रायः समझा जाता है। राजनीतिक संघर्षों का यह एक जरूरी दाँव पेंच है। कोई भी राष्ट्र जो अत्याचारी शासकों के खिलाफ उठ खड़ा होता है, शुरू में अवश्य असफल रहता है। संघर्ष के बीच में समझौते द्वारा कुछ आधे-अधूरे सुधार हासिल करता है और सिर्फ अन्तिम दौर में ही कृ जब सभी शक्तियाँ और साधन पूरी तरह संगठित हो जाते हैं कृ शासक वर्ग को नष्ट करने के लिए आखिरी जोरदार हमला किया जा सकता है। लेकिन यह भी सम्भव है कि तब भी असफलता हाथ लगे और किसी प्रकार का समझौता अनिवार्य हो जाये। रूस के उदाहरण से यह बात अच्छी तरह स्पष्ट की जा सकती है।

1905 में जब रूस में क्रान्तिकारी आन्दोलन शुरू हुआ तो राजनीतिक नेताओं को बड़ी आशाएँ थीं। लेनिन तब विदेश से, जहाँ वे शरण लिये हुए थे, लौट आये थे और संघर्ष का नेतृत्व कर रहे थे। लोग उन्हें यह बताने पहुँचे कि दर्जनों जागीरदार मार दिये गये हैं और बीसियों महल जला दिये गये हैं। लेनिन ने उत्तर में कहा कि लौटकर 1200 जागीरदार मारो और इतने ही महल व हवेलियाँ जला दो, क्योंकि यदि असफल रहे तो भी इसका कुछ मतलब होगा। ड्यूमा (रूसी संसद) की स्थापना हुई। अब लेनिन ने ड्यूमा में हिस्सा लेने की वकालत की। यह 1907 की बात है, जबकि 1906 में वे पहली ड्यूमा में हिस्सा लेने के खिलाफ थे, बावजूद इसके कि उस ड्यूमा में काम करने का अवसर अधिक था और इस ड्यूमा के अधिकार अत्यन्त सीमित कर दिये गये थे। वह फैसला बदली हुई परिस्थितियों के कारण था। अब प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ बहुत बढ़ रही थीं और लेनिन ड्यूमा के मंच को समाजवादी विचारों पर बहस के लिए इस्तेमाल करना चाहते थे।

क्रान्तिकारी गतिविधियाँ

भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव –

भगत सिंह

उस समय भगत सिंह करीब बारह वर्ष के थे जब जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ था। इसकी सूचना मिलते ही भगत सिंह अपने स्कूल से 12 मील पैदल चलकर जलियाँवाला बाग पहुँच गये। इस उम्र में भगत सिंह अपने चाचाओं की क्रान्तिकारी किताबें पढ़ कर सोचते थे कि इनका रास्ता सही है कि नहीं? गांधी जी का असहयोग आन्दोलन छिड़ने के बाद वे गान्धी जी के अहिंसात्मक तरीकों और क्रान्तिकारियों के हिंसक आन्दोलन में से अपने लिये रास्ता चुनने लगे। गान्धी जी के असहयोग आन्दोलन को रद्द कर देने के कारण उनमें थोड़ा रोष उत्पन्न हुआ, पर पूरे राष्ट्र की तरह वो भी महात्मा गांधी का सम्मान करते थे। पर उन्होंने गांधी जी के अहिंसात्मक आन्दोलन की जगह देश की स्वतन्त्रता के लिये हिंसात्मक क्रांति का मार्ग अपनाना अनुचित नहीं समझा। उन्होंने जुलूसों में भाग लेना प्रारम्भ किया तथा कई क्रान्तिकारी दलों के सदस्य बने। उनके दल के प्रमुख क्रान्तिकारियों में चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु इत्यादि थे। काकोरी काण्ड में 4 क्रान्तिकारियों को फाँसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि उन्होंने 1928 में अपनी पार्टी नौजवान भारत सभा का हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन में विलय कर दिया और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन।

विरासत से साक्षात्कार: भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन

होली के दिन रक्त के छींटे / 15 मार्च, 1926

काकोरी के वीरों से परिचय / मई, 1927

काकोरी के शहीदों की फाँसी के हालात / जनवरी, 1928

काकोरी के शहीदों के लिए प्रेम के आँसू / जनवरी, 1928

ISSN-2230-7540

अन्तरराष्ट्रीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का अध्ययन

अराजकतावादरू एक / मई, 1928

अराजकतावादरू दो / जून, 1928

अराजकतावादरू तीन / जुलाई, 1928

रूस के युगान्तकारी नाशवादी (निहिलिस्ट) / अगस्त, 1928

रूस की जेलें भी स्वर्ग हैं / सितम्बर, 1928

मेरी रूस यात्रा / अक्टूबर, 1928

आयरिश स्वतन्त्रता युद्ध / अक्टूबर, 1928

क्रान्तिकारी पार्टी

क्रान्तिकारियों के सक्रिय ग्रुप की मुख्य जिम्मेदारी, जनता तक पहुँचने और उन्हें सक्रिय बनाने की तैयारी में होती है। यही हैं वे चलते-फिरते दृढ़ इरादों के लोग जो राष्ट्र को जुझारू जीवनी शक्ति देंगे। ज्यों-ज्यों परिस्थितियाँ पकती हैं तो इन्हीं क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों-जो बुर्जुआ व पेटी बुर्जुआ वर्ग से आते हैं और कुछ समय तक इसी वर्ग से आते भी रहेंगे, लेकिन जिन्होंने स्वयं को इस वर्ग की परम्पराओं से अलग कर लिया होता है कृ से क्रान्तिकारी पार्टी बनेगी और फिर इसके गिर्द अधिक से अधिक सक्रिय मजदूर-किसान और छोटे दस्तकार राजनीतिक कार्यकर्ता जुड़ते रहेंगे। लेकिन मुख्य तौर पर यह क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियों, स्त्रियों व पुरुषों की पार्टी होगी, जिनकी मुख्य जिम्मेदारी यह होगी कि वे योजना बनायें, फिर उसे लागू करें, प्रोपेगण्डा या प्रचार करें, अलग-अलग यूनियनों में काम शुरू कर उनमें एकजुटता लायें, उनके एकजुट हमले की योजना बनायें, सेना व पुलिस को क्रान्ति-समर्थक बनायें और उनकी सहायता या अपनी अन्य शक्तियों से विद्रोह या आक्रमण की शक्ल में क्रान्तिकारी टकराव की स्थिति बनायें, लोगों को विद्रोह के लिए प्रयत्नशील करें और समय पड़ने पर निर्भीकता से नेतृत्व दे सकें।

वास्तव में वही आन्दोलन का दिमाग हैं। इसीलिए उन्हें दृढ़ चरित्र की जरूरत होगी, यानी पहलकदमी और क्रान्तिकारी नेतृत्व की क्षमता। उनकी समझ राजनीतिक, आर्थिक और ऐतिहासिक समस्याओं, सामाजिक रुझानों, प्रगतिशील विज्ञान, युद्ध के नये वैज्ञानिक तरीकों और उसकी कला आदि के अनुशासित भाव से किये गये गहरे अध्ययन पर आधारित होनी चाहिए। क्रान्ति का बौद्धिक पक्ष हमेशा दुर्बल रहा है, इसलिए क्रान्ति की अत्यावश्यक चीजों और किये कामों के प्रभाव पर ध्यान नहीं दिया जाता रहा। इसलिए एक क्रान्तिकारी को अध्ययन-मनन अपनी पवित्र जिम्मेदारी बना लेना चाहिए।

उपसंहार

भगत सिंह अव्यावहारिक चिंतन के एक पहलू पर बड़े विस्तार से विचार करते हैंरू शारीरिक श्रम को मानसिक श्रम से किस प्रकार जोड़ा जाए? वे स्वीकार करते हैं कि एक समाजवादी समाज की स्थापना के लिए दोनों की दूरी को समाप्त करना बुनियादी आवश्यकता है। परंतु वे महसूस करते हैं कि रामसरन दास द्वारा सुझाए गए यांत्रिक और काल्पनिक साधनों द्वारा अर्थात् सभी मानसिक श्रम करने वालों से प्रतिदिन चार घंटे शारीरिक श्रम करवाकर इस दूरी को समाप्त नहीं किया जा सकता। शारीरिक तथा मानसिक श्रम की प्रकृति में भिन्नता है। इस समस्या का मूल कारण दोनों के बीच की मौजूदा असमानता है। इस समस्या का समाधान तभी हो सकता है जब दोनों को उत्पादनकारी श्रम समझा जाए तथा इस विचार का विरोध किया जाए कि मानसिक कार्य करने वालों से श्रेष्ठ होते हैं।

ISSN-2230-7540

अंत में, भगत सिंह मार्क्स, एंगेल्स लेनिन की सर्वश्रेष्ठ परंपराओं से संबंध रखने वाले आलोचनात्मक क्रांतिकारी हैं। युवाओं को 'द ड्रीमलैंड' के अध्ययन के लिए प्रेरित करते हुए वे चेतावनी देते हैं, ''आंख मूंदकर इसका अनुसरण करने के लिए इसे मत पढ़ो तथा जो कुछ इसमें लिखा है उसे पूर्ण रूप से सत्य मत मानो। इसे पढ़ो, इसकी समीक्षा करो, इस पर विचार करो और इसकी मदद से अपने विचारों को स्वयं विकसित करो।''

सन्दर्भ

1. अमर शहीद भगत सिंह, वीरेन्द्र सिंधु, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, नयी दिल्ली, संस्करण-1974, पृष्ठ-4 (भूमिकादि के बाद)।
2. क्रान्तिवीर भगत सिंह: 'अभ्युदय' और 'भविष्य', संपादक- चमनलाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-2012, पृ०-28.
3. शहीद सरदार भगत सिंह, रामदुलारे त्रिवेदी, त्रिवेदी एंड कंपनी, कानपुर, प्रथम संस्करण-1938 ई०, पृष्ठ-9.
4. क्रान्तिवीर भगत सिंह: 'अभ्युदय' और 'भविष्य', संपादक- चमनलाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-2012, पृ०-100.
5. क्रान्तिवीर भगत सिंह: 'अभ्युदय' और 'भविष्य', संपादक- चमनलाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-2012, पृ०-232.
6. क्रान्तिवीर भगत सिंह: 'अभ्युदय' और 'भविष्य', संपादक- चमनलाल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-2012, पृ०-279.
7. भारत में सशस्त्र क्रांति-चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त, नागरी प्रेस, प्रयाग, संस्करण-1939, पृष्ठ-237.
8. स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास (भाग-दो) पृष्ठ-565
9. 'गत सिंह नास्तिक क्यों थे?'-
10. 'On Bhagat Singh's death anniversary: 'Why I am an atheist'
11. 'भगत सिंह की जिंदगी के वे आख़िरी 12 घंटे'.
12. Chinmohans ehanavis- "Impact of Lenin on BhagatS ingh's Life"- Mainstream Weekly- अभिगमन तिथि 28 October 2011.
13. स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास (भाग-दो) पृष्ठ-५६६
14. अमर शहीद को नमन राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली प्रकाशन 2002 पृष्ठ 92 पर अभ्युदय में 25 मार्च 1931 को (फाँसी के दो दिन बाद) प्रकाशित एक समाचार

Corresponding Author

Sneha Pandey*

Student

aditipandey9430@gmail.com